सरलीकृत शिवपूजनविधि (आगमिक)

स्थापित लिंग (जैसे मंदिर आदि में) तथा नर्मदेश्वर लिंग में विना आवाहन आदि के पूजा शुरू की जा सकती है। लोक में शिवपूजा की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, यहाँ एक संक्षिप्त प्रचलित विधि दी जा रही है। इस पुस्तक में एक अन्य विधि भी दी गयी है जिसमें मन्त्रों के अन्दर न केवल भेद हैं अपितु वह थोड़ी विस्तृत भी है। पहले की भाँति शुद्ध हो आसन ग्रहण कर पूजा का संकल्प लेकर ध्यान करें।

ध्यानम् – **ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं**
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
बन्धूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
त्रिशूलधारिणं देवं चारुहासं सुनिर्मलम्।।
कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम्।
उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत् सोमेश्वरं सदा।।

आवाहनम् – **आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।**
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः आवाहनं समर्पयामि' (आवाहन के निमित्त पुष्प चढ़ायें)

***आसनम् –** **विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वर प्रिय।**
आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं तुभ्यमीश्वर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामि' कहकर आसन दें अथवा उसके निमित्त फूल दें।

***पाद्यम् –** **महादेव महेशान महादेव परात्पर।**
पाद्यं गृहाण मद्दत्तं पार्वतीसहितेश्वर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि' कहकर पाद्य अर्पण करें।

***अर्घ्यम् –** **त्र्यम्बकेश सदाचार जगदादिविधायक।**
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्वार्थदायक।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यम् समर्पयामि' कहकर अर्घ्य दें।

***आचमनीयम् –** **त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्ठ शाश्वत।**
गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदक कल्पितम्।।

---

* आसन, पाद्य, अर्घ्य तथा आचमन आदि संबंधी विस्तृत जानकारी के लिये 'देवपूजा – प्रकरण' नामक लेख देखें।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयम् समर्पयामि' कहकर आचमनी से जल गिरा दें।

गोदुग्धस्नानम्– मधुरं गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरस्कृतम्।
स्नानार्थं देव देवेश गृहाण परमेश्वर ।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः गोदुग्धस्नानम् समर्पयामि' कहकर भगवान् को गौ के दूध से स्नान करायें।

दधिस्नानम् – दुर्लभं दिवि सुस्वादु दधि सर्वप्रियं परम्।
पुष्टिदं पार्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि' कहकर दही से स्नान करायें।

घृतस्नानम् – घृतं गव्यं शुचि स्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिमिच्छताम्।
गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चन्द्रशेखर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानम् समर्पयामि' कहकर घी से स्नान करायें।

मधुस्नानम्– मधुरं मृदु मोहघ्नं स्वरभंगविनाशनम्।
महादेवेदमुत्सृष्टं तव स्नानाय शंकर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः मधु (शहद) स्नानम् समर्पयामि' कहकर शहद से स्नान करायें।

शर्करास्नानम्– तापशान्तिकरी शीता मधुरास्वाद – संयुता।
स्नानार्थं देव देवेश शर्करेयं प्रदीयते।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानम् समर्पयामि' कहकर शर्करा से स्नान करायें।

***शुद्धोदकस्नानम्– गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।**
सरस्वत्यादितीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि' कहकर शुद्ध जल से स्नान करायें।

***वस्त्रम् – सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।**
मयोपपादिते देव गृह्यतां वाससी शुभे।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रम् समर्पयामि' कहकर वस्त्र समर्पित करें।

यज्ञोपवीतम् – नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण पार्वतीपते।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि' कहकर यज्ञोपवीत समर्पित करें।

***गन्धम् – श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।**

---

* शुद्धोदक, वस्त्र तथा गन्ध संबंधी बातों की जानकारी के लिये 'देवपूजा-प्रकरण' नामक लेख पढ़ें।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः गन्धम् समर्पयामि' कहकर गन्ध समर्पित करें।

***अक्षताः –** **अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ शुभ्रा धूताश्च निर्मलाः।**
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि' कहकर अक्षत समर्पित करें।
(बिना टूटे चावल सात दफा (बार) धोये हुए अक्षत कहलाते हैं।)

***पुष्पाणि –** **माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।**
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पं च पुष्पमालां समर्पयामि' कहकर पुष्प एवं माला समर्पित करें।

***बिल्वपत्राणि–** **बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च।**
मयाऽर्पितं महादेव बिल्वपत्रं गृहाण मे।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि' कहकर बिल्व-पत्र समर्पित करें।

***धूपम् –** **वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।**
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि' कहकर देवता के सामने धूप जलायें।

***दीपम् –** **साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।**
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि' कहकर दीप दिखायें तथा हाथ धो लें।

***नैवेद्यम् –** **शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।**
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि' कहकर नैवेद्य निवेदन करें।

***आचमनीयम्–** **एलोशीर – लवंगादि – कर्पूर – परिवासितम्।**
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गिरिजापते।।

---

* अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, बिल्वपत्र, फूल, नैवेद्य, आचमन आदि से संबंधित विचारों की जानकारी के लिये 'देवपूजा-प्रकरण' नामक लेख पढ़ें।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयम् समर्पयामि' कहकर आचमन के निमित्त सुवासित जल प्रदान करें।

***ताम्बूलम् –** **पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।**
ऐलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि' कहकर ताम्बूल समर्पित करें।

दक्षिणाम् – **हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि' कहकर कुछ द्रव्य दक्षिणा के रूप में समर्पित करें।

***आरती –** **कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।**
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि' कहकर बर्तन में कर्पूर जलाकर आरती करें तथा स्तोत्र आदि का पाठ करें। आरती को दोनों हाथों से लेकर माथे पर लगाने के बाद हाथ धो लें।

आरती के उपर्युक्त मंत्र के अलावा अपनी रुचि के अनुकूल किसी भी आरती का पाठ किया जा सकता है जैसे– **'ओम् जय जगदीश हरे....'** इत्यादि।

***प्रदक्षिणाम् –** **यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।**
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि' कहकर शिवजी की आधी प्रदक्षिणा(परिक्रमा) करें। अगर जल निकलने की नाली ढकी हो तो पूरी प्रदक्षिणा भी हो सकती है।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि– नानासुगन्धपुष्पैश्च यथाकालोद्भवैरपि।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

'सांगाय सायुधाय साम्बसदाशिवाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं समर्पयामि' कहकर (आक, धतूरा, कनेर आदि के) पुष्प चढ़ावें तथा नमस्कार करें। पुष्पांजलि समर्पित करने के पश्चात् **'ॐ अनेन यथाशक्ति–कृतेन षोडशोपचार–पूजनेन भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्।'** कहकर समस्त पूजनकर्म देवेश को अर्पण कर दें। इतना करने के बाद निश्चित संख्या में मंत्रजप करें तथा समाप्ति पर जप को भगवान् के दाहिने हाथ में समर्पण करने की भावना करके नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर क्षमाप्रार्थना करें तथा जहाँ आवश्यक हो वहाँ विसर्जन कर दें।

* ताम्बूल, आरती आदि की विस्तृत जानकारी हेतु 'देवपूजा–प्रकरण' नामक लेख पढ़ें।

क्षमा – प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व मां महेश्वर।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व पार्वतीपते।।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद नन्दिकन्धर।।

(उपर्युक्त लेख शिवपूजासंबंधी प्रचलित पुस्तकों से लिया गया है।)

❀❀❀❀❀❀

सत्य आचरण का महत्त्व

सत्यमेव परं ब्रह्म सत्यमेव परं तपः।
सत्यमेव परं ज्ञानं सत्यमेव परं श्रुतम्।।
तीर्थसेवा तपो दानं स्वाध्यायो गुरुसेवनम्।
सर्वं सत्यविहीनस्य व्यर्थं संजायते यतः।।
सर्वो धर्मा धृताः पूर्वमेकतोऽन्यत्र वै ऋतम्।
तुलाया कौतुकाद्देवैर्जातं तत्र ऋतं गुरु।।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक, गीताप्रेस, नागरखण्ड 19/20, 22-23 पृ. 835-36 से उद्धृत)

अर्थात्-सत्य ही परब्रह्म है, सत्य ही परम तप है, सत्य ही परम ज्ञान है और सत्य ही परम शास्त्र है। सत्यहीन मनुष्य के द्वारा किये हुए तीर्थ-सेवन, तप, दान, स्वाध्याय और गुरुसेवा-ये सब धर्म व्यर्थ हो जाते हैं। एक समय देवताओं ने कौतुहलवश अपनी तुला पर एक ओर तो सम्पूर्ण धर्मों को रक्खा और दूसरी ओर केवल सत्य को, तो सत्य का ही पलड़ा भारी रहा।